संकटपूर्ण समयों में भविष्यद्वाणी का प्रकट होना



हिंदी अनुवादक:
पादरी विजय पाल सिंह

पाठ 11 दिसंबर 12,
2026 के लिए

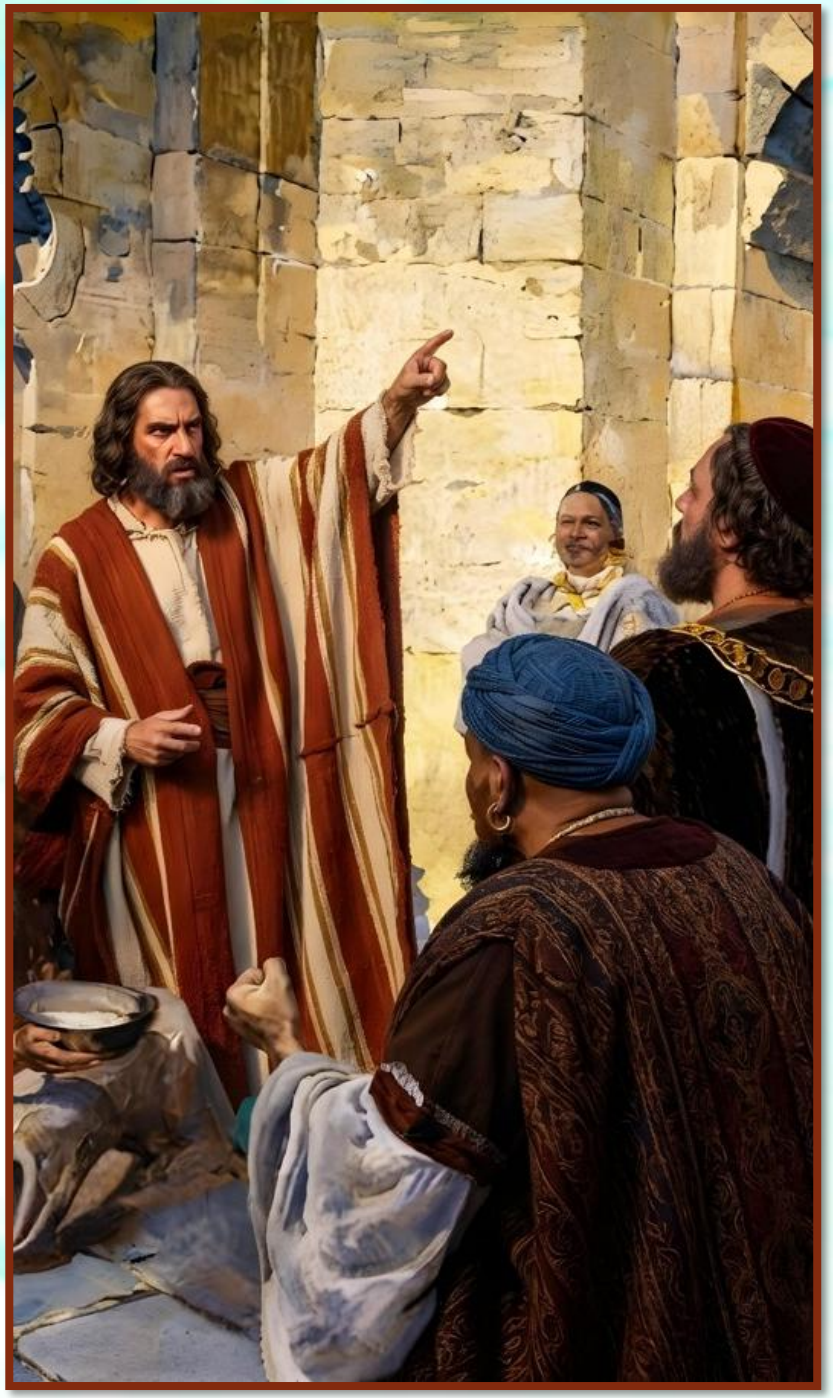





“इसी प्रकार से प्रभु यहोवा अपने दास भविष्यद्वक्ताओं पर अपना मर्म बिना प्रगट किए कुछ भी न करेगा।”

(आमोस 3:7)

परमेश्वर इतिहास का स्वामी है। “समयों और ऋतुओं को वही बदलता है; राजाओं का अस्त और उदय भी वही करता है” (दानिय्येल 2:21)।

इतिहास में कोई बड़ा परिवर्तन करने से पहले, परमेश्वर अपने भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से उसकी सूचना देता है (आमोस 3:7)।

वह ऐसा क्यों करता है? क्योंकि वह नहीं चाहता कि पापियों का नाश हो, बल्कि वह चाहता है कि वे पश्चात्ताप करें, अपने चालचलन को बदलें और अनन्त जीवन पाएँ।

उदाहरण के लिए, यदि राजा सिदकिय्याह ने स्वयं को दीन किया होता और पश्चात्ताप किया होता, तो यरूशलेम नष्ट नहीं होता (यिर्मयाह 38:17-18)।





भविष्यद्वाणी का प्रकट होना



जलप्रलय से पहले के काल में



न्यायियों के काल में



राजाओं के काल में



निर्वासन के काल में



अन्तिम समय के लिए

जलप्रलय से पहले के काल में भविष्यद्वाणी का प्रकट होना

"तब यहोवा ने कहा, "मैं मनुष्य को जिसकी मैं ने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूँगा; क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूँगा, क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूँ।" परन्तु यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही।" (उत्पत्ति 6:7-8)

मानवजाति की प्रारंभिक पीढ़ियों में, शेत के वंशज परमेश्वर का नाम लेकर प्रार्थना करते थे, लेकिन कैन के वंशज ऐसा नहीं करते थे (उत्पत्ति 4:16, 26)। सातवीं पीढ़ी तक, इन दोनों समूहों के बीच स्पष्ट अंतर दिखाई देने लगा था: लेमेक हिंसक और बहुविवाही था, जबकि हनोक परमेश्वर के साथ-साथ चलता था (उत्पत्ति 4:19, 23; उत्पत्ति 5:22)।



उस समय से सब कुछ तेजी से बिगड़ने लगा। परमेश्वर के पुत्रों (शेत के वंशजों) ने मनुष्यों की पुत्रियों (कैन के वंशजों) के साथ विवाह किए और परमेश्वर से दूर होते गए, यहाँ तक कि "उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है" (उत्पत्ति 6:1-5)।



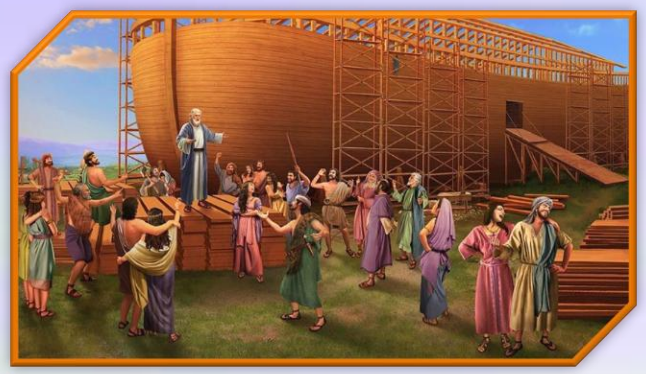

इस कारण परमेश्वर ने पापी मानवजाति का नाश करने का निर्णय लिया (उत्पत्ति 6:6-7)। लेकिन ऐसा करने से पहले, उसने अपने भविष्यद्वक्ता नूह के द्वारा उन्हें पाप से फिरने और उद्धार पाने का अवसर दिया। नूह धार्मिकता का प्रचार करनेवाला था (उत्पत्ति 6:8, 11-14; 2 पतरस 2:5)।

न्यायियों के काल में भविष्यद्वाणी का प्रकट होना

"उस समय लप्पीदोत की स्त्री दबोरा, जो नबिया थी, इस्राएलियों का न्याय करती थी।" (न्यायियों 4:4)



यहोशू और उसके बाद नेतृत्व करनेवाले वृद्ध लोगों की मृत्यु के बाद, इस्राएल के लोग भ्रष्ट हो गए और परमेश्वर को उनसे अपनी सुरक्षा हटा लेनी पड़ी (न्यायियों 2:7, 11-15)।

उस समय के दौरान, परमेश्वर ने अपने लोगों की दो प्रकार से सहायता की: उसने उन्हें पश्चात्ताप करने के लिए बुलाने हेतु भविष्यद्वक्ता भेजे (न्यायियों 6:8-10); और उन्हें बचाने के लिए न्यायियों को भेजा (न्यायियों 2:16)। दबोरा में ये दोनों भूमिकाएँ एक साथ दिखाई देती हैं (न्यायियों 4:4)।



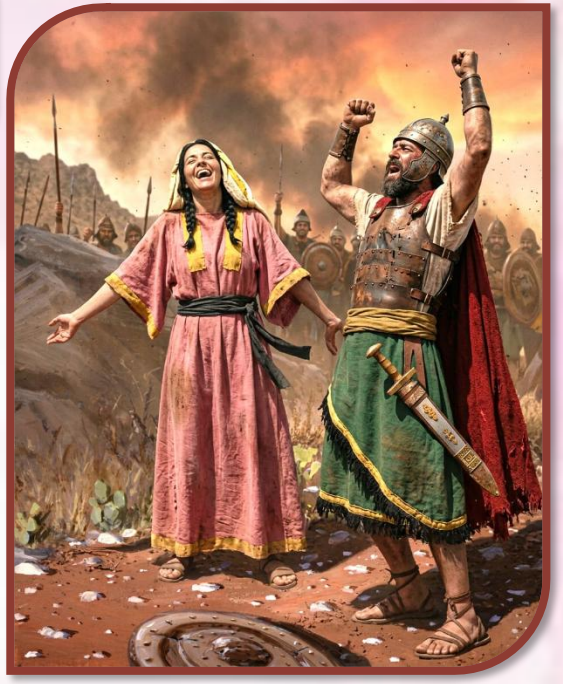

दबोरा ने सेनापति बाराक को परमेश्वर की आज्ञा सुनाई कि वह सीसरा को हराकर याबीन के हाथ से इस्राएल को छुड़ाए (न्यायियों 4:6-7)। सैनिक दृष्टि से यह असंभव था, लेकिन दबोरा ने यह सन्देश देने में संकोच नहीं किया। उसने बाराक को इस कार्य को स्वीकार करने और लोगों का नेतृत्व करने के लिए राजी किया (न्यायियों 4:8-10)।

इस्राएल की शानदार विजय के बाद, दबोरा और बाराक ने लोगों का ध्यान सच्चे उद्धारकर्ता की ओर लगाया, उसी की ओर जिसने उन्हें विजय प्रदान की थी।

ऐसा करने के लिए, उन्होंने मिलकर परमेश्वर की महान छुटकारे के लिए उसकी स्तुति में एक गीत गाया (न्यायियों 5:1-2)।

राजाओं के काल में भविष्यद्वाणी का प्रकट होना

"और एलिय्याह सब लोगों के पास आकर कहने लगा, "तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे हो लो; और यदि बाल हो, तो उसके पीछे हो लो।" लोगों ने उसके उत्तर में एक भी बात न कही।" (1 राजाओं 18:21)



परमेश्वर के प्रयासों के बावजूद, न्यायियों का काल पाप में बार-बार गिरने की निरंतर प्रवृत्ति से चिह्नित था (न्यायियों 2:18-19)। दाऊद के राजवंश की स्थापना से ऐसा लगा कि इस प्रवृत्ति पर रोक लग गई है, लेकिन कुछ ही समय बाद इस्राएल विभाजित हो गया और उसके राजाओं ने (विशेषकर उत्तरी राज्य के राजाओं ने) लोगों को परमेश्वर से विमुख होने की ओर ले गए।



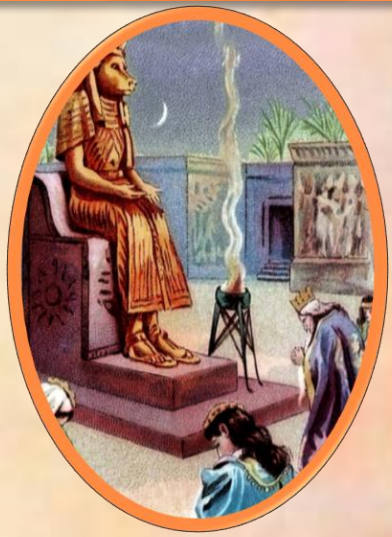





राजा अहाब के समय में, एलिय्याह ही परमेश्वर का एकमात्र भविष्यद्वक्ता था, जबकि ईज़ेबेल बाल और अशेरा के 850 भविष्यद्वक्ताओं को समर्थन देती थी (1 राजा 18:19)।

जब एलिय्याह ने लोगों से पश्चात्ताप करने के लिए कहा, तो उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया (1 राजा 18:21)। एक महान आश्चर्यकर्म के बाद, लोगों ने अंततः परमेश्वर को स्वीकार किया (1 राजा 18:39)।

आज के एलिय्याह के समान, हमारा विशेष कार्य भी परमेश्वर को नकारनेवाली दुनिया को पश्चात्ताप करने के लिए बुलाना है।

निर्वासन के काल में भविष्यद्वाणी का प्रकट होना

"तू तो बहुत वर्ष तक उनकी सहता रहा, और अपने आत्मा से नबियों के द्वारा उन्हें चिताता रहा, परन्तु वे कान नहीं लगाते थे, इसलिये तू ने उन्हें देश देश के लोगों के हाथ में कर दिया।" (नहेम्याह 9:30)

परमेश्वर ने उत्तरी राज्य—इस्राएल—में अनेक भविष्यद्वक्ताओं को भेजा, लेकिन उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया। अंततः, परमेश्वर को उन्हें अश्शूरियों के हाथों निर्वासन में जाने देना पड़ा (2 राजा 17:5-6)।

दक्षिणी राज्य—यहूदा—कमोबेश परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बना रहा था, लेकिन अपने पापों के कारण उन्हें भी बाबुल में निर्वासन में जाना पड़ा (2 इतिहास 36:20)।









न्यायियों के काल में राष्ट्रीय स्तर पर परमेश्वर से विमुख होने की शुरुआत से लेकर बाबुल के निर्वासन तक, आठ शताब्दियाँ बीत गईं। पापी के प्रति परमेश्वर कितना धैर्यवान है! (नहेम्याह 9:30)।

लेकिन निर्वासन में भी परमेश्वर अपने लोगों को नहीं भूला। वहाँ भी उसने यहेजकेल और दानिय्येल जैसे भविष्यद्वक्ताओं को भेजा। जब लोग परमेश्वर की ओर लौटे, तो वह उन्हें वापस यरूशलेम ले आया (2 इतिहास 36:22-23)।

अन्तिम समय के लिए भविष्यद्वाणी का प्रकट होना



"यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य, जो उसे परमेश्वर ने इसलिये दिया कि अपने दासों को वे बातें, जिनका शीघ्र होना अवश्य है, दिखाए; और उसने अपने स्वर्गदूत को भेजकर उसके द्वारा अपने दास यूहन्ना को बताया" (प्रकाशितवाक्य 1:1)

यीशु ने यूहन्ना पर इस्राएल के लोगों के उत्तराधिकारी, अर्थात् परमेश्वर के चुने हुए लोगों—मसीही कलीसिया—का इतिहास प्रकट किया (प्रकाशितवाक्य 1:1)। यह इतिहास एक ऐसी कलीसिया को दिखाता है, जिसने इस्राएल के समान परमेश्वर से विमुख होने का मार्ग अपनाया, और साथ ही उन विश्वासियों के समूह को भी दिखाता है जो अन्तिम समय तक विश्वासयोग्य बने रहेंगे।



न्याय और विनाश के दर्शनों के बीच-बीच में, प्रकाशितवाक्य हमें आशा के वचन देता है, ताकि परमेश्वर के बेटे-बेटियों को विश्वासयोग्य बने रहने का प्रोत्साहन मिले।





यूहन्ना ने लिखा कि जब यीशु वापस आएगा, तब जय पानेवालों को नए यरूशलेम में स्थान मिलेगा, जो नई पृथ्वी की राजधानी होगी। वहाँ हम बीमारी, मृत्यु या पीड़ा के बिना अनन्तकाल तक जीवित रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 21:1-7)।



इन अन्तिम दिनों में, परमेश्वर ने आनेवाली घटनाओं के बारे में हमारे ज्ञान को बढ़ाने और हमारे मसीही जीवन में हमारी सहायता करने तथा मार्गदर्शन देने के लिए एक भविष्यद्वक्ती को भी भेजा है।

“बीते युगों में स्वर्ग के प्रभु परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ताओं पर अपने रहस्य प्रकट किए थे, और आज भी वह ऐसा ही करता है। वर्तमान और भविष्य, दोनों उसके लिए समान रूप से स्पष्ट हैं, और वह अपने सेवकों को आनेवाली घटनाओं का इतिहास दिखाता है। सर्वज्ञ परमेश्वर ने युगों के पार दृष्टि डालकर अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा, भविष्य में होनेवाली घटनाओं से सैकड़ों वर्ष पहले ही राज्यों के उत्थान और पतन की भविष्यवाणी कर दी थी। परमेश्वर की वाणी युगों से गूँजती हुई पृथ्वी के निवासियों को बताती है कि आगे क्या होनेवाला है। राजा और राजकुमार अपने नियत समय पर अपना स्थान ग्रहण करते हैं। वे सोचते हैं कि वे अपनी योजनाओं को पूरा कर रहे हैं, लेकिन वास्तव में वे उस वचन को पूरा कर रहे होते हैं जिसे परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा दिया है।”

ई जी व्हाइट (मसीह की विजय, 16 नवंबर

परिशिष्ट: एलेन जी. व्हाइट का ऐतिहासिक विकास

एलेन जी. व्हाइट की भविष्यद्वाणी की सेवकाई 60 से अधिक वर्षों तक चली। उनके माध्यम से परमेश्वर ने विभिन्न दर्शन और सन्देश दिए, जो नवगठित सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया की उभरती आवश्यकताओं के अनुसार धीरे-धीरे बदलते गए।



1844-1863

बड़ी निराशा के बाद उन्होंने विश्वासियों को प्रोत्साहित किया और उन्हें सांत्वना दी।

± 1863-1869

उन्होंने स्वास्थ्य सुधार को बढ़ावा दिया।

± 1870-1879

उन्होंने एडवेंटिस्ट शिक्षा प्रणाली के विकास में सहायता की।

± 1880-1900

उन्होंने धर्मी ठहराए जाने के विषय में एडवेंटिस्ट धर्मविज्ञान में संतुलन स्थापित किया।

± 1901-1903

उन्होंने संप्रदाय की संगठनात्मक संरचना के पुनर्गठन में भाग लिया।

